PRAJAPITA BRAHMA KUMARIS ISHWARIYA VISHWA VIDYALAYA
Founded in 1937 by World Almighty Authority Incorporeal Supreme Father
God Shiva through the Medium of Prajapita Brahma.

Supreme Father
God Shiva

Local Centre :
Brahma Kumaris, Vishwa Shanti Bhawan
Rajpura Chauraha
Bhadohi - 221401 (U.P.)
Tel : 05414-224947, Mob : 9452925281
Email : bhadohi@bkivv.org

Headquarters :
Brahma Kumaris, Pandav Bhawan
Dadi Prakashmani Marg
Mount Abu - 307501 (Raj.)
Tel : 02974-238261 to 64
Website : www.brahmakumaris.com

प्रेस विज्ञप्ति

Date - 26/02/18

शिविर का तीसरा दिन

मैं कौन हूँ, इस गुत्थी को यदि हम सुलझा ले तो असीम शक्तियां जागृत हो जाएंगी
आत्मशक्ति की पहचान ही सभी मानसिक चिंताएं एवं समस्याओं का समाधान है

भदोही। आज हम सागर की गहराई तक जाना चाहते हैं। आकाश की ऊंचाई को छूना चाहते हैं, चंद्रमा पर भी पहुंच गए हैं, दूर-दूर तक पहुंच गए लेकिन स्वयं के बारे में नहीं जान पाएं कि मैं कौन हूँ? और जिस दिन हम स्वयं को पहचान लेंगे तो हमारे भीतर छुपी हुई शक्तियां जागृत हो जाएगी और हमें हर बात खेल लगेगी। मनुष्य के भीतर ही असीम शक्तियों का भण्डार छुपा हुआ है। जरूरत है उसे जागृत करने की। इतिहास गवाह है जिन-जिन ने भी अपनी इस आत्मशक्ति को पहचाना और कार्य में लगाया वे महान बन गए। समस्याएं तो सबके आगे आई पर आत्मशक्ति को कार्य में लगाने वाले ने असंभव से असंभव कार्य भी पूरे कर दिए। उनके सामने कोई भी विघ्न नहीं टिक सके, पहाड़ जैसी समस्याएं भी धराशाही हो गई। सिकन्दर ने सबसे पहले अपनी डिसनरी से असंभव शब्द को हटाया और वह फिर आगे बढ़ा विश्व विजय की ओर।

इस आत्मशक्ति की पहचान दी आज ब्रह्माकुमारी पूनम बहन ने तनाव मुक्ति शिविर के एडवांस कोर्स के प्रथम दिन। आपने मेडिटेशन के द्वारा प्रैक्टिकल में यह अनुभव कराया कि वास्तव में मैं शरीर नहीं हूँ पर इससे अलग एक अजर, अमर, अविनाशी आत्मा हूँ। कैसे आत्मा और शरीर अलग है। जब यह अभ्यास कराया गया तो साधकगण अपने शरीर की सुधबुध भूल चुके थे एवं असीम शांति के सागर में खो गए थे। अपने को एकदम हल्का महसूस कर रहे थे। वे महसूस कर रहे थे कि शरीर अलग है और चैतन्य शक्ति आत्मा अलग।

सारी चिंताएं, रोग, शोक आदि तब ही उत्पन्न होते हैं जब हम अपने को शरीर समझने लगते हैं। जब हम अपने को शरीर समझते हैं तो मालिक शरीर हो जाता है और आत्मा गुलाम। आत्मा शरीर के अधीन हो गई है और अपनी सभी कर्मेन्द्रियों की गुलाम हो गई है और यही तनाव का मुख्य कारण है। आज हमारा अपनी मुख रूपी कर्मेन्द्रिय पर नियंत्रण नहीं है। मुख्य द्वारा हम कुछ भी बोल देते हैं। बोल पर नियंत्रण नहीं होने के कारण ही संबंध बिगड़ते हैं। छोटी-छोटी सी बातों में हम क्रोधित हो जाते हैं। जिसका खामियां हमें जीवन भर भुगतना पड़ता है। छोटी-सी ढ़ाई इंच की जुबान में हड्डी तो नहीं होती पर चाहे तो ये किसी की हड्डी तोड़ सकती है। जबकि इस संसार में बोल का ही महत्व है। चाहे तो बोल से महाभारत खड़ी कर दे या संबंधों में भी मिठास भर दे, बड़े से बड़ा काम करा लेवे।

आज साधकों को घर पर करने के लिए होमवर्क के रूप में अभ्यास दिया कि आज वे मीठे बोल ही बोलें व उसका चमत्कार देखें।

आज व्यक्ति व्यसन आदि का गुलाम बन गया है। तो जैसे ही आज साधकों को बताया गया कि आत्मा ही मालिक

The Brahma Kumaris is a Non-Government Organisation (NGO) affiliated to the Department of Public Information (DPI) of the United Nation. It has General Consultative Status with the UN Economic & Social Council (ECOSOC) & UNICEF.

है, आत्मा जो चाहे वह कर सकती है, शक्तिशाली आत्मा है, मालिक कभी भी कर्मेन्द्रियों के अधीन नहीं होता तो लोगों के अंदर एक नई शक्ति का संचार हुआ और देखते ही देखते शिविर के दौरान ही कईयों ने अपने व्यसन छोड़ने का तत्काल दृढ़ संकल्प किया।

आज शिविर में महामंत्र दिया गया कि मन को शक्तिशाली बनाओं और समस्या भगाओ। आज मन कमजोर होने के कारण हम हर समस्या के गहराई तक चले जाते हैं, राई जैसी बातों को पहाड़ का रूप दे देते हैं। यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि ज्यादा सोचने से समस्याएं विकराल रूप धारण कर लेती है। कभी-कभी तो यह भी होता है कि समस्या चली जाती है लेकिन सोच नहीं जाती है सोचना हमारी एक आदत बन गई है। अगर हम समस्याओं से मुक्ति चाहते हैं तो ज्यादा नहीं सोचें, क्योंकि ज्यादा सोचने से भविष्य बदलने वाला नहीं है। होगा वही जो इस खेल में निश्चित है।

कल शिविर का विशेष आकर्षण होगा – परिवर्तन महोत्सव। जिसके द्वारा यह बताया जाएगा कि वर्षों पुराने स्वभाव, संस्कार, भावनाएं, जो व्यक्ति के मार्ग में बाधा बनकर खड़े हैं, उनका प्रैक्टिकल परितर्वन कैसे करें। जिसके परिवर्तन होने पर हमारे वर्षों पुराने बिगड़े संबंध सुधर जाएंगे ताकि हम तनावमुक्ति जीवन अनुभव कर सकें।